ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 39 कुल पृष्ठ-8 11 से 17 मई, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 ज्ये. कृ.-06

|| ओ३म् ||

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200 वीं

1824-2024

ओ३म्
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु

जन्म जयन्ती वर्ष एवं 31 मई, 1883 को जोधपुर आगमन व प्रवास के उपलक्ष में
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं आर्य वीर दल राजस्थान के तत्वावधान में जोधपुर (राज.) में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 26, 27, 28 मई 2023 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

मुख्य अतिथि

श्री अशोक गहलोत, माननीय मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार

डॉ. बी.डी. कल्ला
शिक्षामंत्री, राजस्थान

श्री उदयलाल आंजना
मंत्री, राजस्थान

श्री राजेन्द्र सिंह सोलंकी
अध्यक्ष, वन विकास बोर्ड, राजस्थान

श्री सुनील परिहार
समाजसेवी

श्रीमती मनीषा पंवार
विधायक, एवं सम्मेलन स्वागताध्यक्ष

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रबल समर्थक महर्षि दयानन्द सरस्वती

– स्वामी आदित्यवेश

स्वतंत्रता, स्वराष्ट्र, स्वभाषा, स्वभूषा, स्वसंस्कृति के प्रबल पक्षधर महर्षि दयानंद सरस्वती ऐसे दिव्य राष्ट्रपुरुष थे जिनका संपूर्ण चिंतन और कार्य जहां आध्यात्मिकता से ओतप्रोत था। वहीं राष्ट्र उनके लिए प्रथम था। व्यक्ति की सर्वांगीण उन्नति स्वयं से ही प्रारंभ होती है। किसी भी क्षेत्र की पराधीनता व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिए अधोगति का कारण बनती है। पराधीन व्यक्ति चाह कर भी कुछ नहीं कर पाता। महर्षि दयानंद सरस्वती जी और आर्य समाज ने भारतवासियों में राष्ट्रीय भावना भरने और देश प्रेम जागृत करने की पहल की। भारत की आधुनिक राजनीतिक प्रगति के कर्णधारों को राजनीतिक स्वतंत्रता के संघर्ष और सार्वजनिक सेवा की प्रेरणा ऋषि दयानंद आर्य समाज से मिली है। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास लेखकों के द्वारा यह बात कई जगह स्वीकार की गई है। कांग्रेस इतिहास के लेखक श्रीयुत सीताभिपट्टा रमैया ने कांग्रेस इतिहास के प्रारंभ में ही इस बात को पूर्वक स्वीकार किया है कि ऋषि दयानंद ही पहले महापुरुष थे जिन्होंने स्वराज्य की आवश्यकता पर बल दिया और देशवासियों को हृदय पर उसकी महिमा अंकित की। इतिहासकार सुखसंपत्ति राय जी भंडारी ने लिखा की महर्षि दयानंद सरस्वती ने भारतवासियों में राष्ट्रीयता के भाव भरे और स्वराज्य का मंत्र दिया। उन्होंने यह दिखलाया कि भारतवासी केवल सुराज्य ही नहीं चाहते बल्कि स्वराज्य चाहते हैं।

देश के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह प्रायः यह कहते थे कि ऋषि दयानंद मेरे धार्मिक गुरु हैं। विदेशी विद्वान डी. बैबले ने कहा वर्तमान स्वतंत्र भारत की वास्तविक आधारशिला महर्षि दयानंद ने ही रखी थी। फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान रोम्या रोला ने कहा था भारतीय राष्ट्रीय पुनर्जागरण के मसीहा ऋषि दयानंद हैं। डॉक्टर एनी बेसेंट ने अपनी पुस्तक "इंडिया ए नेशन" में लिखा है स्वामी दयानंद जी ने सर्वप्रथम घोषणा की थी कि "भारत भारतीयों" के लिए है।

स्वराज्य ही वैदिक संस्कृति का आदेश है और प्रत्येक देश के निवासी का अधिकार है कि वह अपने देश का शासन आप संचालित करें।

जिन सामाजिक और धार्मिक कारणों से भारतवर्ष का पतन हुआ उनका नाश करने में महर्षि दयानंद ने बड़े जोर का प्रहार किया। उन्होंने भारतवर्ष में जो धार्मिक और सामाजिक क्रांति की उसने उस भूमिका को तैयार किया जिस पर आज स्वराज्य की इमारत खड़ी की जा रही है। भारत के राष्ट्र निर्माताओं में स्वामी दयानंद का नाम अपना विशेष स्थान रखता है।

महर्षि विदेशियों के राज्यों को पूर्ण सुखदायक नहीं मानते थे। वे सत्यार्थ प्रकाश में अपनी इस धारणा को इस प्रकार व्यक्त करते हैं कोई कितना ही करें परंतु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। भारत को विदेशियों की राजनीतिक परतंत्रता से मुक्त कराने के लिए ऋषि की धारणा जो थी वो बाद में देश के कर्णधारों के हृदय में अंकुरित हुई और जो उनके महान तप, त्याग और बलिदान से पलवित होकर भारतवर्ष के विदेशियों की दासता से मुक्त होने का कारण बनी। महर्षि दयानंद सरस्वती विदेशी राज्य को देश पर एक बड़ा अभिशाप समझते थे। देश की राजनीतिक

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

परतंत्रता से उनके हृदय में पीड़ा थी। जिसका आभास उनके निम्न उद्‌गार से मिलता है। जब अभाग्य से देशवासियों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों में राज्य करने की तो क्या ही कहें, आर्यवर्त में भी आर्यों का अखंड स्वाधीन राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों के आधीन है। कुछ थोड़े राजा स्वतंत्र हैं। इन विकट परिस्थितियों से देश को निकालने के लिए महर्षि दयानंद तथा उनके अनुयायियों ने अपने अंतिम श्वास तक संघर्ष किया।

महर्षि दयानंद सरस्वती से प्रेरित होकर आजादी के आंदोलन में अग्रणी नेताओं में शामिल स्वामी श्रद्धानंद, देवता स्वरूप भाई परमानंद, लाला लाजपत राय, भवानी दयाल सन्यासी(दक्षिण अफ्रीका) अंबा प्रसाद, गेंदालाल दीक्षित, दादा अर्जुन सिंह, चाचा अजीत सिंह, शहीद ए आजम भगत सिंह, लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंकने वाले भाई बालमुकुंद (जो भाई परमानंद जी के चचेरे भाई थे) शहीद–ए–आजम राम प्रसाद बिस्मिल, मदन लाल धींगरा, श्यामजी कृष्ण वर्मा के विशेष शिष्य तीनों चापेकर बंधु, न्यायमूर्ति गोविंद रानाडे (जो परोपकारिणी सभा के सदस्य भी रहे) महाशय रतन चंद, डॉक्टर सत्यपाल, माता रतन देवी, इंद्र विद्यावाचस्पति, स्वामी स्वतंत्रानंद, महात्मा आनंद स्वामी, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, लाला सुनाम राय, खुशीराम, भगवानदास, सुखदेव, प्रोफेसर प्रेम दत्त, वीरचंद्र सिंह गढ़वाली, स्वामी अभेदानंद आचार्य नरदेव, चंद्रभान गुप्त, चौधरी वेदव्रत, महात्मा आनंद स्वामी के पुत्र रणवीर सिंह, कृष्णानंद प्रोफ़ेसर ताराचंद गाजरा, प्रोफेसर आनंद बलदेव गजरा, लाला जगत नारायण, युद्धवीर सिंह, भीमसेन सच्चर, लेहना सिंह, श्यामजी कृष्ण वर्मा की प्रेरणा से गदर पार्टी की संस्थापना करने वाले लाला हरदयाल जैसे सैकड़ों आर्य नेताओं ने स्वाधीनता आंदोलन का नेतृत्व किया। कितने ही ऐसे क्रांतिकारी थे जो भले ही सीधे तौर पर आर्य समाज से नहीं जुड़े थे लेकिन आर्य समाज मंदिरों में, गुरुकुल में और डीएवी स्कूलों में जहां शरण लेते थे वही उनके प्रांगण में बैठकर के आजादी के आंदोलन की रणनीति बनाते थे। उस समय कि कांग्रेस और आर्य समाज दोनों के नेता एक साथ मिलकर के आजादी के आंदोलन को आगे बढ़ा रहे थे। वहीं आर्य समाज संगठन अपने स्तर पर भी अलग से समस्त आंदोलन की गतिविधियों में अलग–अलग तरह से भूमिका निभा रहे थे। अपने संस्थापक के स्वतंत्रता प्रेम तथा देशभक्ति के भावों से प्रेरणा लेकर आर्य समाज ने अपने शैशव काल से ही भारत के स्वाधीनता संग्राम में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

12 फरवरी 1824 को जन्मे महर्षि दयानंद सरस्वती का आज पूरा विश्व 199 वां जन्मदिवस मना रहा है। साथ ही आर्य समाज 200 वें जन्म जयंती वर्ष के अवसर पर विश्व व्यापी कार्यक्रमों का शुभारंभ कर रहा हैं। ये सुखद संयोग है जब पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और अब द्वितीय जन्म शताब्दी भी इसी वर्ष मनाई जाएगी। आज हम इस महामानव को याद करते हुए उनके द्वारा किए कार्यों को याद कर रहे हैं। साथ ही स्वराष्ट्र,स्वभाषा, स्वभूषा, स्वसंस्कृति, स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक बनकर इनको दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने का संकल्प भी दोहरा रहे हैं।

– प्रधान , सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद

आर्य महासम्मेलन में प्रमुख संन्यासियों का आशीर्वाद

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी

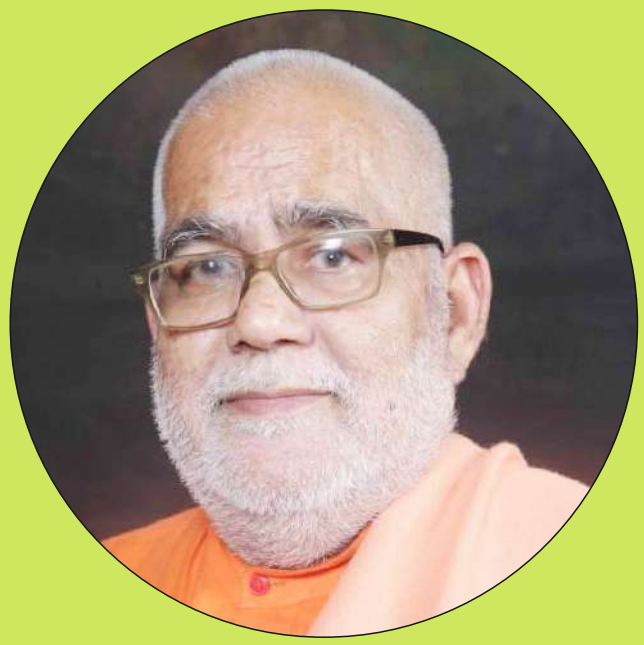

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी

स्वामी ओमवेश जी

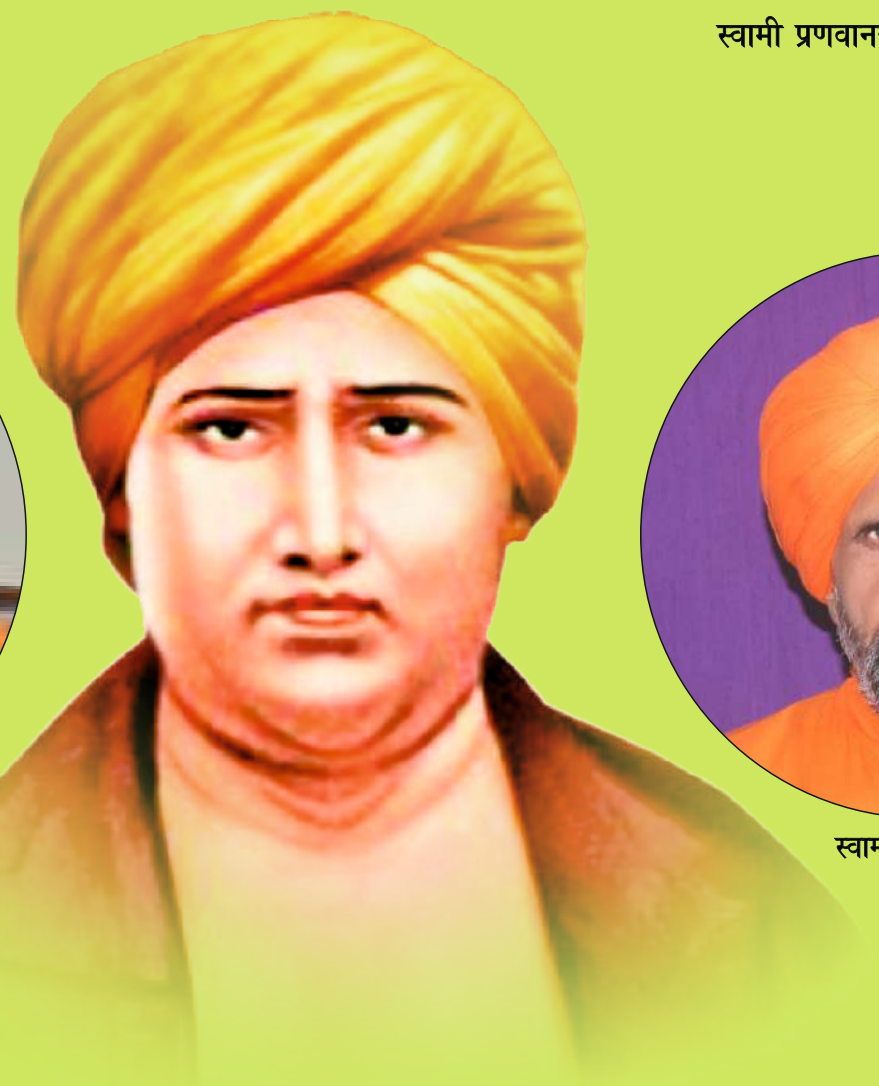

स्वामी नित्यानन्द जी

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वामी रामवेश जी

स्वामी यज्ञमुनि जी

स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती जी

आर्य महासम्मेलन में आर्य बहनों की उपस्थिति

आचार्या सूयदिवी चतुर्वेदा

बहन प्रवेश आर्या

बहन पूनम आर्या

श्रीमती कुंती देवड़ा
महापौर, जोधपुर, उत्तर

डॉ. पवित्रा विद्यालंकार

श्रीमती वनिता सेठ
महापौर, जोधपुर, दक्षिण

डॉ. सुनीता मल्हान

बहन कल्याणी आर्या
विदुषी भजनोपदेशिका

श्रीमती शकुन्तला रावत
मंत्री, राजस्थान सरकार

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

की

200 वीं

1824-2024

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु

जन्म जयन्ती वर्ष एवं 31 मई, 1883 को जोधपुर आगमन व प्रवास के उपलक्ष में
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं आर्य वीर दल राजस्थान के तत्वावधान में जोधपुर (राज.) में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 26, 27, 28 मई 2023 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

स्थान : रेलवे सामुदायिक भवन, डी-6-A-B, भैरू चौराहा, भगत की कोठी रोड़, जोधपुर (राज.)

अध्यक्षता
स्वामी आर्यवेश
नेता, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

समन्वयक
प्रो. विट्ठलराव आर्य
मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

सान्निध्य
पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में देश-विदेश के विद्वानों, आर्य सन्यासियों, आचार्यों, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों, आर्यवीरों, आर्य विरांगनाओं, आर्य नेताओं एवं राजनेताओं की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी। आप सभी से प्रार्थना है कि आप अधिक से अधिक संख्या में जोधपुर पहुँचकर इस आर्य महासम्मेलन में शामिल होवें तथा आर्य समाज की संगठन शक्ति का परिचय देकर इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें ।

जोधपुर के बाहर से आने वाले आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि अपने साथियों सहित पधारने की संख्या के बारे में 15 अप्रेल, 2023 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन, आवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सकें । सम्पर्क :- भंवरलाल आर्य-9414476888, जितेन्द्रसिंह-9828129655, हरिसिंह आर्य-9413957390

इस ऐतिहासिक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित हैं, कृपया दान राशि आर्य प्रतिनिधि सभा समिति (पंजीकृत) जोधपुर के नाम से क्रॉस चैक/मनी ऑर्डर/ड्राफ्ट/ऑनलाईन भिजवाने का कष्ट करें अथवा संस्था द्वारा संचालित खाते में सीधे ऑन लाईन के माध्यम से भिजवा कर सूचित करने का कष्ट करें जिससे रसीद शीघ्र आपको भेजी जा सके। खाते का विवरण निम्न प्रकार है - यूको बैंक खाता संख्या A/C - 00860110015582 IFSC Code : UCBA0002244 सहयोग राशि प्राप्त होने के बाद रसीद आपको भेज दी जायेगी।

निवेदक

बिरजानन्द एडवोकेट	कमलेश शर्मा	भंवरलाल आर्य	चाँदमल आर्य	जितेन्द्रसिंह	हरिसिंह आर्य	दीपकसिंह पंवार	स्वामी आदित्यवेश
प्रधान	मंत्री	समन्वयक/अधिष्ठाता/संचालक	अध्यक्ष	महामंत्री	अध्यक्ष	समाजसेवी	संयोजक
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान	आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान	आर्य वीर दल राजस्थान	आर्य वीर दल राजस्थान	आर्य वीर दल राजस्थान	आर्य वीर दल जोधपुर	आर्य समाज जोधपुर	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
9001304100	9460066557	9414476888	9413844743	9828129655	9413957390	9414134716	7015259713

आयोजन समिति :- जोधपुर - सर्वश्री नारायणसिंह आर्य, भंवरलाल हठवाल, गजेसिंह भाटी, पृथ्वीसिंह भाटी, रोशनलाल आर्य, शिवप्रकाश सोनी, सौभागसिंह चौहान, डॉ. लक्ष्मणसिंह आर्य, विनोद गहलोत मदनगोपाल आर्य, उम्मेदसिंह आर्य, पूनमसिंह शेखावत, विनोद आचार्य, हेमन्त शर्मा, वीरूमल आर्य, हनुमानप्रसाद गौड़, कमलेश सांखला, विक्रमसिंह आर्य, महेश आर्य, गणपतसिंह आर्य, जतनसिंह भाटी विकास आर्य, द्वारकादास आर्य, अशोक आर्य, जयनारायण आर्य, इन्द्रसिंह, राजेश देवड़ा (आर्य), जयदीपसिंह आर्य, भंवरलाल बिंवाल, अमृतलाल, भरतकुमार नवल, अभिषेक गहलोत, गुलाबचन्द आर्य मनोजकुमार परिहार, विरेन्द्र मेहता, चैनाराम आर्य, किशोरसिंह, कुलदीपसिंह सोलंकी, जयपुर :- ओमप्रकाश वर्मा, पुरूषोत्तमदास, शंकरलाल शर्मा, कृष्णचन्द शर्मा, श्रीमती मृदला सामवेदी, नाथुलाल शर्मा बलदेवराज आर्य, विकास आर्य, जितेन्द्र हरितवाल, अनिल शर्मा, पवन एडवोकेट, जालोर :- दलपतसिंह आर्य, कृष्णकुमार तिवारी, प्रशान्तसिंह, शिवदत्त आर्य, विनोद आर्य, कान्तिलाल आर्य अम्बिकाप्रसाद तिवारी, वरूण शर्मा, छगन आर्य, जगदीश आर्य, मोहनलाल भादरू, छगननाथ, गणपत आर्य, कन्हैयालाल मिश्रा, भरत मेघवाल, शिवगंज सिरोही :- हरदेव आर्य, जितेन्द्रसिंह आर्य जीवाराम आर्य, बनवारीलाल अग्रवाल, सुरेश मित्तल, दिनेश आर्य, नवरत्न आर्य, पुरूषोत्तम आर्य, मदन आर्य, कानाराम चौहान, देवाराम चौहान, पाली :- धनराज आर्य, दिलीप कुमार परिहार, मघाराम विजयराज आर्य, कुन्दन आर्य, देवेन्द्र मेवाड़ा, महेन्द्र प्रजापत, वासुदेव शर्मा, दिलीप गहलोत, गणपत भदोरिया, घेवरचन्द आर्य, हीरालाल आर्य, गजेन्द्र अरोड़ा, बालोतरा :- राजेन्द्र गहलोत अचलचन्द गहलोत, गोविन्दराम परिहार, मंगलाराम पंवार, बागाराम पंवार, लक्ष्मणलाल कच्छवाह, मांगीलाल पंवार, लूणचन्द चौहान, गणपतलाल गहलोत, दिलीप गहलोत, जितेन्द्र गहलोत, नरेश पंवार रामचन्द्र कच्छवाह, ओमप्रकाश आर्य, अरविन्द पुरोहित, अलवर :- धर्मवीर आर्य, वैद्य सुल्तानसिंह, कैलाश कर्मठ, मास्टर हरिसिंह आर्य, नरेन्द्र शर्मा, रामानन्द आर्य, ललित यादव, मीरसिंह आर्य अजमेर :- डॉ. गोपाल बाहेती, गोविन्द शर्मा, गणेश वैष्णव, सत्यनारायण शर्मा, किशनकुमार वैष्णव, सवाईमाधोपुर :- ओमप्रकाश आर्य, गिरधारसिंह एडवोकेट, अंकित जैन, कोटा :- देवप्रकाश मिश्रा शिवनारायण उपाध्याय, रघुवीरसिंह कच्छवाह, राजेन्द्रसिंह पावटा, भरत कुशवाह, इन्द्रकुमार सक्सैना, भरतपुर/दौसा :- अन्नतराम आर्य, विनोद कुमार, गिरीराज प्रसाद शर्मा, पं. राकेश आर्य, सुनील शर्मा

आयोजक

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं आर्य वीर दल राजस्थान

कार्यालय : आर्य समाज, पाबूपुरा, गौरव पथ, नागरिक हवाई अड्डा रोड़, जोधपुर-342015 (राज.)

वेदों में प्रतिपादित नारी का आदर्श स्वरूप

– डॉ. शारदा वर्मा

जन्म - सर्वप्रथम प्रश्न उठता है कन्या के जन्म का। कुछ लोग आक्षेप करते हैं कि वेदों में तथा अन्य वैदिक साहित्य में भी केवल पुत्र–जन्म की ही कामना की गई है, यहां तक कि दस पुत्र उत्पन्न करने का आदेश दिया गया है। इसका अर्थ यह है कि पुत्री जन्म की कामना वेद में नहीं की गई है, किन्तु वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। ऐसे प्रसंगों में पुत्र शब्द से पुत्री का भी ग्रहण होता है। इस प्रकार पुत्र और पुत्री दोनों की समानरूप से कामना की गई है। इस विषय में पाणिनि मुनि प्रमाण है। अष्टाध्यायी के एकशेष प्रकरण के **'भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्'** (पा० १। २।६८) सूत्र के आधार पर स्वसा और दुहिता के साथ भ्राता तथा पुत्र का समास करने पर भ्राता और पुत्र ही शेष रहते हैं यथा–भ्राता च स्वसा च=भ्रातरौ, पुत्रश्च दुहिता च=पुत्रौ। इसी प्रकार माता च पिता च इति 'पितरौ' बनता है। इस प्रकार पुत्र शब्द से पुत्र एवं पुत्री दोनों का ही ग्रहण होता है। इसके अतिरिक्त बृहदारण्यकोपनिषद् में तो विस्तार से पुत्र व पुत्री के जन्म के लिए पृथक्–पृथक् औषधियों व खानपान का भी उल्लेख किया गया है।

शिक्षा - वैदिककाल में स्त्री को भी पुरुष के समान ही पढ़ने–पढ़ाने का अधिकार प्राप्त था। अथर्ववेद ११। ५।१८ का मन्त्र सुप्रसिद्ध है–**''ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।''** यहाँ पर विशेष कथनीय यह है कि यहाँ ब्रह्मचर्य शब्द का अर्थ वेदाध्ययन है। अविवाहित रहकर, संयमपूर्वक शारीरिक ब्रह्मचर्य मात्र इसका अर्थ नहीं है। ब्रह्म का अर्थ वेद है–तत् चरति इति ब्रह्मचारी। चर् धातु गति तथा भक्षण अर्थ में है। गति के तीन अर्थ हैं– ज्ञान, गमन तथा प्राप्ति। इसका अर्थ है कि जो ब्रह्म अर्थात् वेद का ज्ञान तथा प्राप्ति करे वह ब्रह्मचारी है। कन्या भी इसी प्रकार ब्रह्मचारिणी होती थी। वह वेद का अध्ययन करती थी। कालान्तर में ब्रह्मचारी शब्द अविवाहित के अर्थ में रूढ़ हो गया। क्योंकि वेदाध्ययनकाल में छात्र–छात्राएँ अविवाहित ही रहते थे। शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों को सम्मानित स्थान प्राप्त था। यहाँ तक कि चरणसंज्ञक वैदिक शिक्षा केन्द्रों में भी वे प्रविष्ट होकर अध्ययन करती थीं। **'जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'** (पा० ४।१।६३) सूत्र में जातिवाची स्त्री नामों में गोत्र और चरणवाची नामों का ग्रहण सब आचार्यों ने माना है। काशिका में 'कठी' और 'बह्वृची' ये उदाहरण दिये गये हैं। कृष्णयजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा का एक चरण कठ था। उसके संस्थापक आचार्य कठ सुप्रसिद्ध आचार्य वैशम्पायन के अंतेवासी थे। कठ के चरण में विद्याध्ययन करने वाली स्त्रियाँ कठी कहलायीं। इसी प्रकार बृह्वृच नामक ऋग्वेद के चरण में अध्ययन करने वाली ब्रह्मचारिणी कन्या बृहवृची संज्ञा की अधिकारिणी थीं। इससे ज्ञात होता है कि चरणों में जो मान–मर्यादा छात्रों की होती थी। वही छात्राओं के लिए भी थी। मीमांसा और व्याकरण जैसे जटिल विषयों का अध्ययन भी स्त्रियाँ करती थी। इस विषय में पातञ्जल महाभाष्य भी प्रमाण है। महाभाष्य (४।१।१४) में तृतीय वार्त्तिक की व्याख्या में लिखा है–**आपिशलम् अधीते ब्राह्मणी आपिशला।** इसी प्रकार वार्त्तिक पाँच की व्याख्या में **'काशकृत्स्निना प्रोक्ता मीमांसा काशकृत्स्नी, तामधीते काशकृत्स्ना'** लिखा है अर्थात् अपिशलि आचार्य से व्याकरण पढ़नेवाली आपिशला तथा काशकृत्स्नि आचार्य से मीमांसा का अध्ययन करने वाली स्त्री का शकृत्स्त्रा कहलाती थी। इसी प्रकार पाणिनीय व्याकरण का अध्ययन करनेवाली कन्या पाणिनीया कहलाती थी।

अध्यापन - ऐसे प्रमाण भी स्पष्टरूप में पाये जाते हैं कि विदुषी स्त्रियाँ अध्यापन के क्षेत्र में भी योगदान करती थीं जिसके आधार पर वे उपाध्याया तथा आचार्या जैसे गौरवपूर्ण पदों को भी प्राप्त करती थी। मनु ने साङ्गोपाङ्ग वेद के पढ़ानेवाले को ही आचार्य कहा है। इसी का स्त्रीलिङ्ग रूप 'आचार्या' है।

विवाह - विवाह का जो आदर्शस्वरूप वेद में वर्णित है वह अन्यत्र दुर्लभ है। विवाह–संस्कार के समय वर वधू से कहता है–**समापः हृदयानि नौ।** अर्थात् हम दोनों के हृदय जल के समान एक हो जाएँ। जिस प्रकार जल से जल को पृथक् नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार पति और पत्नी को भी पृथक् नहीं किया जा सकता। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते हुए वर और वधू का एक वार्तालाप ऋग्वेद (१०।१८३।१२) में दिया गया है। वहां दोनों ओर से एक–दूसरे को युवा–युवति, पुत्रकाम और पुत्रकामा इन शब्दों से सम्बोधित किया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि वेद की सम्मति में उन्हीं स्त्री पुरुषों को विवाहित–जीवन में प्रवेश करना चाहिए जो युवा हो चुके हों।

एकपत्नीत्व - वैदिकधर्म में एक पुरुष की एक ही पत्नी हो सकती है तथा एक स्त्री का एक ही पति हो सकता है। यह नियम जीवनभर के लिए लागू है। अथर्ववेद और ऋग्वेद में विवाह के समय नव वर–वधू को उपदेश दिया है ''कि तुम दोनों पति–पत्नी इस गृहस्थाश्रम की मर्यादा में स्थिर रहो। तुम कभी एक–दूसरे को मत छोड़ो तथा सम्पूर्ण आयु को प्राप्त करो।''

इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्वमार्युव्यश्नुतम्।

– अथर्व० १४।१।२२; ऋग्० १०।८५।४२

अथर्ववेद में वर अपनी वधू को सम्बोधित करके कहता है ''हे पत्नि ! तू मुझ पति के साथ सन्तानवाली हो, तथा सौ वर्ष तक जीवित रहो।'' **मया पत्या प्रजावति सं जीव शरदः शतम्।** (अथर्व० १४।१।५२) कुछ स्त्रियाँ आजीवन कुँवारी रहती थीं। वे बड़ी होने पर वृद्ध कुमारी, जरत्कुमारी कहलाती थी। महाभारत में सुलभा नाम की एक भिक्षुणी का भी उल्लेख आया है।

वेश-भूषा - वेद में स्त्री की वेश–भूषा पर भी प्रकाश डाला गया है जो पैरों तक ढकी हुई होनी चाहिए–**मा ते कश्प्लकौ दृशन् स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ** (ऋग्० ८।३३।१९)। आधुनिकता के प्रतीक स्कर्ट आदि जो वस्त्र आज उपलब्ध हो रहे हैं वे वेद को अभिमत नहीं। स्त्री की वेश–भूषा ऐसी हो जिससे उसका शरीर अधनङ्गा न रहकर भली प्रकार आच्छादित रहे। वेद में स्त्री के मुख ढकने का विधान नहीं है अर्थात् परदाप्रथा वेदानुकूल नहीं है।

दहेज - वेद में प्रतीकरूप में सूर्या और सोम के आदर्श विवाह का उल्लेख किया गया है जिसमें दहेज के रूप में वैदिक–ज्ञान का ही प्राधान्य है, किसी प्रकार के धनादि का नहीं। आज दहेज के रूप में धन के प्राधान्य के कारण ही समाज नारकीय स्थिति को प्राप्त हो चुका है। अनेक युवतियाँ इस दानव से त्रस्त होकर आत्महत्याएँ कर रही हैं। स्वाधीन भारत में यह राष्ट्र एवं समाज के नाम पर कलंक है।

विवाह में परस्पर सहमति तथा आकर्षण - वैदिकधर्म में उन्हीं स्त्री–पुरुषों का विवाह–सम्बन्ध हो सकता है जिन्होंने एक–दूसरे को भली प्रकार जान लिया है और देख लिया है। ऋग्वेद के दशवें मण्डल के १८३वें सूक्त में विवाह करने की इच्छावाली वधू अपने भावी पति का सम्बोधन करके कहती है–'हे वर ! मैंने अपने मन–से अच्छी प्रकार तुम्हें जान लिया है तुम बहुत अच्छे ज्ञानी हो और गुरुकुल में तप का, सादगी और संयम का जीवन व्यतीत करके आये हो और तुम्हें सन्तान की कामना है। आइए हम दोनों मिलकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करें।'' इसी प्रकार वरवधू से कहता है–''हे वधू ! मैंने तुम्हें अपने मन से जान लिया है तुम उच्च गुणों वाली युवति हो और मुझे चाह रही हो, तुम्हें सन्तान की कामना भी है। आओ हम मिलकर सन्तानोत्पत्ति करें।''

अथर्ववेद (२।३६।५) में वधू से कहा गया है कि 'हे वधू ! तुम ऐश्वर्य की नौका पर चढ़ो और अपने पति को जो कि तुमने स्वयं

पसन्द किया है, संसार सागर के परले पार पहुँचा दो।'' अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि परस्पर सहमति के बिना वर–वधू का विवाह नहीं होना चाहिए।

किन्तु इस विवाह सम्बन्ध में वर–वधू की अभिरुचि के साथ–साथ माता–पिता तथा गुरुजनों की सलाह भी परमावश्यक है यथा–**'मनसा सविता ददात्'** (अथर्व० १४।१।६) के अनुसार–'कन्या को उत्पन्न करनेवाला पिता अपने मन से सारी बातें सोच–समझकर कन्या को पति के हाथ में देता है।' उसी मन्त्र में कहा है **''अश्विनास्तामुभावरा''** अर्थात् वर और कन्या के माता–पिता कन्या और वर को पसन्द करनेवाले बनते हैं। वैदिक विवाह में माता–पिता और समाज की सहमति भी आवश्यक है–विवाह में उपस्थित लोगों को विश्वेदेवा कहा गया है। आज के समान लड़के, लड़की द्वारा की गई Court Marriage वेद को अभिमत नहीं है।

परिवार में स्थिति - विवाहोपरान्त भी स्त्री को गौरवपूर्ण साम्राज्ञी का स्थान दिया गया है। सम्राट् का अर्थ है शासन करनेवाला। उसका स्त्रीलिङ्ग रूप साम्राज्ञी का सामान्यतः अर्थ शासन करनेवाली किया जाता है, किन्तु वेद में इसी प्रसङ्ग में अन्य मन्त्रों के द्वारा साम्राज्ञी के स्वरूप को स्पष्ट कर दिया गया है–जिस प्रकार नदी समुद्र में जाकर मिल जाती है, उसका स्वरूप पूरी तरह समुद्र में विलीन हो जाता है, बदले में समुद्र उसे अपना विशालतम स्वरूप प्रदान कर देता है। अब वह नदी नहीं, समुद्र कहलाती है। इसी प्रकार नववधु ससुराल में जाकर मिल जाए। यदि आज भी वेद का यह आदर्श स्वरूप अपना लिया जाए तो आज सामाजिक उत्पीड़न की समस्याएँ उत्पन्न ही न हों। परिवार में स्त्री किसी के आश्रित नहीं है जैसा कि परवर्त्ती साहित्य में अनेक श्लोक रच कर स्त्री की स्थिति को दयनीय बना दिया गया। यथा–

पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने।
पुत्राः रक्षन्ति वार्द्धक्ये न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।।

यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि कन्या कुमार अवस्था में विद्याध्ययन के लिए शिक्षणालय में चली गयी है। अतः विद्याध्ययन काल में उसकी रक्षा का प्रश्न ही नहीं है। गृहस्थ जीवन में भी वह स्वयं तेजस्विनी है, परिवार की पोषिका है यहाँ तक कि वह परिवार का आधार है। तभी कहा है जाया इत् अस्तम् (ऋ० ३/५/४) पत्नी ही घर है। **''न गृहं गृहमुच्यते गृहिणी गृहमुच्यते।''**

वेद के अनुसार वह अपने कार्यों के द्वारा प्रशंसित है तथा उसमें अपने पुत्र पुत्रियों को भी अपनी तरह ही साहसी बनाया है। वह घोषणा करती है–

मम पुत्राः शत्रुहणो अथो मे दुहिता विराट्।
उताहमस्मि संज्ञया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः।।

ऋ० १०/१५९/३

अर्थात् मेरे पुत्र शत्रु को नष्ट करने वाले हैं। मेरी पुत्री अपने गुणों से 'विशेषेण राजते इति विराट्' है। मैं स्वयं अपने नाम के द्वारा प्रसिद्ध हूँ। मेरे पति पर भी मेरी उत्तम कीर्ति व्याप्त है। जो लोग वेद में पुत्री की उपेक्षा की बात करते हैं उनको वेद के 'दुहिता विराट्' शब्द पर ध्यान देना चाहिए।

इतना ही नहीं अपितु वैदिक नारी अपने पति को गृह कार्यों में भी उचित परामर्श देकर उसकी सहायिका बनती है। अथर्ववेद १४।१।२० में कहा गया है–**त्वं विदथम् आवदासि।** अर्थात् हे पत्नी, तू हमें ज्ञान का उपदेश कर। पत्नी पति को धन प्राप्ति के उपाय भी बतलाती है–**पतिं देवि राधसे चोदयस्व** (अथर्व० ७।४६।३) पति कहता है–तू सब–कुछ जानने वाली हमें धन–धान्य की पुष्टि दे–**''आद्य रायस्पोषं चिकितुषी दधातु''** (अथर्व० ७।४७।२)। ''तू हमारे घर की प्रत्येक दिशा में ब्रह्म अर्थात् वैदिक ज्ञान का प्रयोग कर'' **''ब्रह्मापरं युज्यतां ब्रह्म पूर्वं ब्रह्मान्ततों मध्यतो ब्रह्म सर्वतः''** (अथर्व० १४।१।६४)। इन सब वचनों से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि वेद की सम्मति में प्रत्येक स्त्री को विवाह से पूर्व, जहाँ तक हो सके, सब प्रकार के ज्ञान प्राप्त कर लेने चाहिएँ ताकि वह गृहस्थ जीवन में उनका यथायोग्य उपयोग कर सके। अथर्ववेद १।१४।३ में कन्या के लिए कुलपा = (कुल का पालन करनेवाली) शब्द आया है। इसी प्रकार यजुर्वेद (१४।२) में 'पुरन्धि' शब्द भी इसी अर्थ में पठित है। अथर्ववेद (१४।१।४२) में पत्नी को सौमनस्य, सौभाग्य तथा ऐश्वर्य की कामना करने के लिए कहा गया है, किन्तु यह तभी सम्भव है जबकि वह पति के व्रत का अनुगमन करनेवाली हो। भाव यह है कि ऐसा करने से ही घर में सौमनस्य तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी अन्यथा नहीं। इसी अभिप्राय से अथर्ववेद (२।३६।४) में भी पत्नी को पति से विरोध न करनेवाली=**'पत्याऽविराधयन्ती'** कहा है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में स्त्री का अत्यन्त ही तेजस्वी स्वरूप इस प्रकार वर्णित है। स्त्री कहती है कि मैं ध्वज के तुल्य अग्रगण्य हूँ। मैं ही मूर्धा के समान प्रमुख हूँ। आवश्यकता पड़ने पर मैं उग्र स्वरूपवाली भी हो जाती हूँ तथा मैं श्रेष्ठ वक्ता भी हूँ। मेरे यशस्वी कार्यों के अनुरूप ही मेरा पति आचरण करे। इसी प्रकार ऋग्वेद के ही एक अन्य मन्त्र में स्त्री को शत्रुनाशक, विजयिनी कहा है।

कुछ लोग आक्षेप करते हैं कि वेद में स्त्रियों के साथ सखाभाव का निषेध किया गया है। यह भेदपूर्ण स्थिति है। इसका उत्तर यह है कि आचरण की शुद्धता और चारित्रिक दृष्टिकोण के कारण ऐसा कहा गया है। वेद में पति का पत्नी के प्रति सखाभाव रखने का स्पष्ट उल्लेख है, किन्तु सभी स्त्रियों के साथ सखाभाव का औचित्य नहीं है जैसाकि आजकल स्कूल–कॉलेजों में तथा अन्यत्र भी Girl Friend तथा Boy Friend की प्रथा चल पड़ी है। इससे अनेक चारित्रिक दोष पैदा हो रहे हैं। चारित्रिक शुद्धता के कारण ही मनुस्मृति में तो यहाँ तक प्रतिबन्ध लगा दिया गया है कि माता, बहिन तथा बेटी के साथ एक ही आसन पर न बैठे। कितनी व्यवहारिक बात है। संग से चारित्रिक दोष उत्पन्न हो सकता है इसीलिए वेद में स्त्री के साथ मैत्रीभाव का निषेध किया गया है।

अन्य वैदिक-साहित्य–वेद के समान ब्राह्मण–गन्थों में भी स्त्री को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। शतपथ ब्राह्मण में पत्नी को पति का आधा भाग मानकर यहाँ तक कह दिया गया है कि जब तक व्यक्ति पत्नी को प्राप्त नहीं कर लेता तब तक अपूर्ण ही रहता है। इसी प्रकार के भाव ऐतरेय आरण्यक में भी प्रकट किये गये हैं। उपनिषद् काल में भी नारी की यही बहुत उत्कृष्ट स्थिति रही है। उपनिषद् काल में नारी ब्रह्मवादिनी रही है। याज्ञवल्क्य के साथ शास्त्रार्थ में गार्गी याज्ञवल्क्य जैसे ब्रह्मवेत्ता को भी शास्त्रार्थ में निरुत्तर कर देती है। इसी प्रकार मैत्रेयी सांसारिक भोग, ऐश्वर्य, धन–धान्य की अपेक्षा ज्ञान प्राप्त करने को प्रमुखता देती है। यह है उपनिषद्कालीन नारी का गौरवपूर्ण इतिहास।

स्मृति ग्रन्थों में भी नारी की अति–सम्माननीय स्थिति का चित्रण है। मनुस्मृति में भी भार्या को मनुष्य का आधा भाग तथा श्रेष्ठतम सखा कहा गया है। मनुस्मृति का वह श्लोक तो सर्वविदित ही है जिसमें कहा गया है कि जहाँ स्त्रियों का सत्कार होता है। वहाँ देवता निवास करते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक अन्य श्लोक की तरफ आपका ध्यान आकृष्ट कराना चाहती हूँ जिसमें कहा गया है, कि जहां नारियों का उत्पीड़न होता है उनपर अत्याचार होता है वे रोती हैं, पीड़ित होती हैं, वह समाज और शब्द नष्ट हो जाता है। आज के सभ्य समाज में नारी का अनेक प्रकार से शोषण हो रहा है, उसका उत्पीड़न हो रहा है अतः आज हमारा समाज तथा राष्ट्र–पतन की ओर ही उन्मुख है, घरों से सुख–शान्ति मानो विदा हो चुकी है।

हमें इस ओर विचार करना चाहिए। द्वापर युग में अकेली द्रौपदी पर हुए अत्याचार ने महाभारत करा दिया था। आज तो न जाने कितनी ललनाएँ उससे भी गयी–बीती दशा को प्राप्त कर रही हैं। आज का तथाकथित सभ्य समाज क्या इस ओर ध्यान देगा।

अध्यक्ष - संस्कृत विभाग, वैश्य आर्यकन्या महाविद्यालय, बहादुरगढ़ (हरियाणा)

संस्कृता स्त्री पराशक्तिः ओ३म् संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जन्म जयन्ती वर्ष

एवं

स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की 17वीं पुण्यतिथि के अवसर पर

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

दिनांक : 6 जून (मंगलवार) से 12 जून (सोमवार), 2023 तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, गांव टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)

पांच सौ कन्याएँ एवं युवतियाँ भाग लेंगी

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जायेगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो–कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- वैदिक विद्वानों व विदुषियों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जायेगा।
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जायेंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- कन्या भ्रूण हत्या, दहेज आदि सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जागरूक किया जायेगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान व मोबाइल अपने साथ न लेकर आयें।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टार्च, सफेद सूट व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लायें।
- इच्छुक छात्राएँ 200 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र अपने माता–पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई तक अवश्य जमा करवाएं। सीटें सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस सात दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातराश आदि पर लाखों रुपये खर्च होने हैं। आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अतः आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग कराएँ। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो क्रास चैक 'स्वामी इन्द्रवेश फाण्डेशन' या 'युवा निर्माण अभियान' के नाम से भिजवाने की कृपा करें अथवा नीचे लिखे बैंक खाते में सीधे परिवर्तित कराने का कष्ट करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइण्ड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिये गये दान से कन्या चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

Name - Swami Indervesh Foundation A/C - 2978000100105117 IFSC - PUNB0297800

Bank - PNB Tilaknagar Rohtak

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, धर्म प्रतिष्ठान एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउंडेशन

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

सम्पर्क नं.:– 9416630916, 9354840454

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन जोधपुर
दिनांक : 26, 27 व 28 मई, 2023 के लिए
आर्य जनता से हार्दिक अपील

सम्माननीय आर्यजन!

जैसा कि आप सभी को विदित है कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्म शताब्दी 2024 में आ रही है। ऋषि दयानन्द जी की दूसरी जन्मशती को पूरे विश्व में ऐतिहासिक रूप में मनाने के लिए प्रत्येक आर्य उत्साहित है। इस उपलक्ष्य में आगामी 26, 27 एवं 28 मई, 2023 (शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार) को जोधपुर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, आर्य वीरदल राजस्थान तथा आर्य वीरदल जोधपुर के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। इस महासम्मेलन में देश के विभिन्न भागों में हजारों की संख्या में आर्य भाई–बहन और युवक/युवतियां भाग लेने के लिए तैयारी कर रहे हैं। समय अब कम रह गया है। अतः आप सभी को जोधपुर आने की तैयारी प्रारम्भ कर देनी चाहिए। जो आर्यजन जोधपुर के सम्मेलन में सम्मिलित होना चाहते हैं वे कृपया अपने आने की सूचना अवश्य ही देने का कष्ट करें कि वे कब और कितनी संख्या में जोधपुर पहुंचेंगे, ताकि आप सभी के भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था की जा सके। देश के अन्य प्रान्तों से आने वाले आर्यजनों को अभी से अपनी रेल या हवाई जहाज आदि से आने के लिए टिकट बुक करा लेनी चाहिए ताकि बाद में असुविधा न हो।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, जोधुपर के इस विशाल आयोजन पर लाखों रुपया व्यय होना है जो आप सभी के पवित्र सहयोग से ही पूरा हो सकेगा। अतः हमारी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप स्वयं अपनी ओर से तथा अपने अन्य मित्रों व सहयोगियों को प्रेरित करके अधिक से अधिक दान राशि आप निम्नलिखित बैंक खाते में या महासम्मेलन के कार्यालय के पते पर बैंक ड्राफ्ट, चैक आदि से भिजवाने की कृपा करें। आपके इस पवित्र दान से यह महायज्ञ तथा महासम्मेलन निश्चित रूप से ऐतिहासिक होगा। जोधुपर को आपके स्वागत में ओ३म् झण्डों तथा ओ३म् की लड़ियों, बैनरों तथा झण्डों से सजाया जा रहा है और आयोजन समिति आपके आव भगत एवं व्यवस्था के लिए दिन–रात परिश्रम कर रही है। हमें पूरा विश्वास है कि आर्यजन दल–बल सहित सम्मेलन में पधारकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति अपनी श्रद्धा एवं निष्ठा का परिचय देंगे। आप किसी भी जानकारी के लिए निम्नलिखित पते पर या दूरभाष पर सम्पर्क कर सकते हैं।

जोधपुर के बाहर से आने वाले आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि अपने साथियों सहित पधारने की संख्या के बारे में 15 अप्रेल, 2023 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन, आवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सकें। सम्पर्क :- भंवरलाल आर्य-9414476888, जितेन्द्रसिंह-9828129655, हरिसिंह आर्य-9413957390

इस ऐतिहासिक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित हैं, कृपया दान राशि आर्य प्रतिनिधि सभा समिति (पंजीकृत) जोधपुर के नाम से क्रॉस चैक/मनी ऑर्डर/ड्राफ्ट/ऑनलाईन भिजवाने का कष्ट करें अथवा संस्था द्वारा संचालित खाते में सीधे ऑन लाईन के माध्यम से भिजवा कर सूचित करने का कष्ट करें जिससे रसीद शीघ्र आपको भेजी जा सके। खाते का विवरण निम्न प्रकार है - यूको बैंक खाता संख्या A/C - 00860110015582 IFSC Code : UCBA0002244 सहयोग राशि प्राप्त होने के बाद रसीद आपको भेज दी जायेगी।

स्वामी आर्यवेश
अध्यक्ष, आर्य महासम्मेलन

प्रो. विट्ठलराव आर्य
मंत्री, सार्वदेशिक सभा

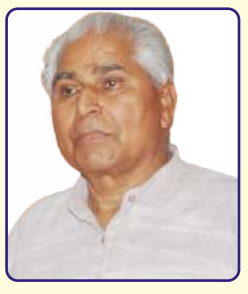

पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा

स्वामी आदित्यवेश
मुख्य संयोजक, आर्य महासम्मेलन

श्री बिरजानन्द एडवोकेट
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

श्री कमलेश शर्मा
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

श्री भंवर लाल आर्य
अधिष्ठाता आर्य वीरदल राजस्थान

श्री हरि सिंह आर्य
अध्यक्ष, आर्य वीरदल जोधपुर

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।